dk'kh fgUnw fo'ofo|ky; ds 93osa nh{kkUr lekjksg ds volj ij ekuuh; dqyifr dk Lokxr Hkk"k.k 12 ekpZ 2011

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इस दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि माननीय उपराष्ट्रपति श्री मोहम्मद हामिद अंसारी जी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ0 कर्ण सिंह जी, उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री अनन्त कुमार मिश्र जी, विश्वविद्यालय के रेक्टर महोदय, विश्वविद्यालय विद्वत परिषद्, कार्यकारिणी एवं कोर्ट के माननीय सदस्यगण, कुलसचिव एवं अन्य अधिकारीगण, शिक्षक वृन्द, विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य, मीडियाकर्मी, आज के दीक्षांत समारोह में उपस्थित सभी प्रिय छात्र एवं छात्राएँ, सम्मानित अतिथिगण, देवियों एवं सज्जनों,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इस दीक्षान्त समारोह में उपस्थित आप सभी गण्यमान अतिथियों का स्वागत करते हुये मुझे अपार गौरव की अनुभूति हो रही है। हमें इस बात का गर्व है कि उच्च शिक्षा की इस गौरवशाली पीठ के दीक्षान्त समारोहों को विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, ख्यातिलब्ध शिक्षक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन, जैसे मनीषियों ने संबोधित किया है। इस गौरवशाली परम्परा की अगली कड़ी में आज भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मोहम्मद हामिद अंसारी जी का नाम जुड़ गया है। हमारे माननीय उपराष्ट्रपति एक असाधारण राजनयिक, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विद्वान, शिक्षाविद् एवं कुशल प्रशासक के रूप में लब्धप्रतिष्ठ हैं। महोदय आपको बताते हुये मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि विगत वर्षों में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहभागिता हेतु विशेष प्रयास किए हैं। वर्तमान में विश्व के लगभग पचास देशों के पांच सौ से अधिक विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं। विश्व के ख्यातिलब्ध शिक्षण संस्थानों से शैक्षणिक संबंध स्थापित कर एवं उनसे शैक्षणिक आदान–प्रदान करते हुये विश्वविद्यालय अपने को अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर स्थापित करने की ओर अग्रसर है।

माननीय उपराष्ट्रपति जी आपका काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पुराना जुड़ाव रहा है और आज इस पुनीत अवसर पर आपको अपने बीच दीक्षांत उद्बोधन के लिए पाकर हम सभी कृतकृत्य हैं। आपके दीक्षान्त सन्देश से हम सभी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे। महोदय विश्वविद्यालय परिवार एवं सभी काशीवासियों की ओर से मैं, आपका तहेदिल से स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति एवं विश्व में भारत के सांस्कृतिक राजदूत के रूप में प्रतिष्ठित डॉ0 कर्ण सिंह जी की गरिमामयी उपस्थिति से इस समारोह की प्रासंगिकता एवं भव्यता में श्रीवृद्धि हुई है। आपके कुशल नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने नयी ऊचाईयाँ प्राप्त की हैं एवं नये प्रतिमान स्थापित किए हैं तथा देश में सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय होने का गौरव प्राप्त किया है। मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय के अभिवर्धन एवं विकास के लिये आपकी सहभागिता भविष्य में भी अक्षुण्ण रहेगी। श्रीमान हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

इस समारोह में हमारे बीच उपस्थित उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री अनन्त कुमार मिश्र जी का मैं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ। आपकी स्नेहमयी उपस्थिति से हम हर्षित हैं।

इस समारोह में उपस्थित विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद, विद्वत परिषद् एवं विश्वविद्यालय कोर्ट के माननीय सदस्यों, माननीय सांसद (राज्यसभा) एवं विश्वविद्यालय कोर्ट के

सदस्य श्री कलराज मिश्र जी, काशी के मेयर श्री कौशलेन्द्र सिंह जी, विभिन्न विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपतियों एवं पूर्व कुलपतियों, सभी आचार्यगण, सम्माननीय अतिथियों, मीडिया जगत के प्रतिनिधिगण एवं नगर के गण्यमान नागरिकों, देवियों और सज्जनों का भी मैं हृदय से स्वागत करता हूँ।

आज के दीक्षान्त समारोह में जिन विद्यार्थियों को उपाधियाँ एवं पदक दिये जाने हैं, उनको मैं अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ एवं उन्हें तथा उनके अभिभावकों को बधाई देता हूँ। मेरा विश्वास है कि उनके बहुमुखी व्यक्तित्व एवं कृतित्व से इस विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा का सतत वर्धन होता रहेगा।

माननीय उपराष्ट्रपति जी! काशी हिन्दू विश्वविद्यालय 25 दिसम्बर, 2010 से 25 दिसम्बर, 2011 तक– एक वर्ष को अपने संस्थापक महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी की 150वीं जयन्ती वर्ष के रूप में मना रहा है। हमारे लिये यह गर्व का विषय है कि महामना के इस जयन्ती वर्ष को पूरे देश में धूमधाम से मनाने के लिये भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया गया है जिसकी अध्यक्षता स्वयं हमारे प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह जी कर रहे हैं। हमारे विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति डॉ0 कर्ण सिंह जी इस समिति के उपाध्यक्ष हैं। यह एक सुखद संयोग एवं अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महामना के 150वीं जयन्ती वर्ष में आयोजित इस दीक्षांत समारोह में आप यहाँ पधारे हैं एवं हम सभी इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी हैं।

महामना द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों एवं मूल्यों के साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने सदैव ही देश एवं वैश्विक पटल पर समसामयिक चुनौतियों के समाधान प्रस्तुत करने में अग्रणी भूमिका निभाई है एवं सामाजिक, शैक्षिक चिन्तन को एक नया परिदृश्य दिया है। महोदय! इस गौरवशाली इतिहास को अक्षुण्ण बनाये रखने में हमने अपने प्रयास में कोई शिथिलता नहीं आने दी है। विगत कुछ वर्षों में विश्वविद्यालय ने विभिन्न क्षेत्रों में नये प्रतिमान स्थापित किये हैं। सम्पूर्ण मानवता को प्रभावित करने वाली दो प्रमुख चुनौतियाँ पर्यावरणीय प्रदूषण एवं अन्तर्देशीय तथा अन्तरक्षेत्रीय मतभेदों और वैमनस्यता, असहिष्णुता आदि के कारण उपजी सामाजिक समस्याओं के समुचित समाधान पर अध्ययन एवं शोध के लिये इस विश्वविद्यालय में पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान तथा यूनेस्को चेयर फार पीस एण्ड इण्टरकल्चरल अण्डरस्टैण्डिंग की स्थापना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पर्यावरण एवं संपोष्य विकास संस्थान देश के किसी विश्वविद्यालय में पर्यावरण अध्ययन एवं शोध के लिये स्थापित अपनी तरह का पहला संस्थान है तथा यूनेस्को चेयर फार पीस एण्ड इण्टरकल्चरल अण्डरस्टैण्डिंग दक्षिण एशिया में स्थापित इस प्रकार की पहली यूनेस्को चेयर है। इनके द्वारा विश्वविद्यालय न केवल अपने राष्ट्रीय विकास की चुनौतियों के परिपेक्ष्य में प्रयास कर रहा है अपितु संपूर्ण विश्व एवं मानवता के समक्ष उपस्थित चुनौतियों के समाधान के लिये भी कृतसंकल्पित है। हमारा विश्वास है कि भविष्य में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पर्यावरण एवं शांति के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अकादमिक नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम बनेगा।

आज के पुनीत अवसर पर अंत में मैं अपने विद्यार्थियों से अपील करना चाहूँगा कि आप महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों एवं मूल्यों को आत्मसात कर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाएं। आप सभी अपने–अपने कार्यक्षेत्र में सफल हों– ऐसी प्रभु से कामना है।

आप सभी का एक बार पुनः स्वागत एवं अभिनंदन।

जय हिन्द